

कैसे लिखें कहानी

इस पाठ में

- ▶ कहानी क्या है?
- ▶ कहानी कितनी पुरानी?
- ▶ कहानी के तत्व

कहानी किसी एक की नहीं, वह कहने वालों की है, सुनने वालों की भी। इसकी, उसकी, सबकी, सृष्टि समूचे परिवार की। नानी की मुहर इस पर है। इस लोक की प्रजा होने के कारण हर किसी की कहानी लिखी और सुनी जा सकती है।

-कृष्णा सोबती



कहानी लेखन पर विचार करने से पहले कहानी के स्वरूप और उसके इतिहास पर कुछ बातचीत करना जरूरी है, कहानी क्या है? अलग-अलग लेखकों और विद्वानों ने कहानी की विभिन्न परिभाषाएँ दी हैं और एक परिभाषा सबको मान्य नहीं है। लेकिन आगे बढ़ने के लिए हम कह सकते हैं कि किसी घटना, पात्र या समस्या का क्रमबद्ध ब्योरा जिसमें परिवेश हो, द्वंद्वत्मकता हो, कथा का क्रमिक विकास हो, चरम उत्कर्ष का बिंदु हो, उसे कहानी कहा जाता है।

वास्तव में कहानी हमारे जीवन से इतनी निकट या उसका इतना अविभाज्य हिस्सा है कि हर आदमी किसी न किसी रूप में कहानी सुनता और सुनाता है। क्या आप जानते हैं कि यदि कोई आदमी किसी बात को बहुत घुमाफिरा कर कह रहा हो तो सुनने

वाला कहता है— कहानी न सुनाओ! जल्दी से बताओ कि हुआ क्या? प्रत्येक मनुष्य में अपने अनुभव बाँटने और दूसरों के अनुभवों को जानने की प्राकृतिक इच्छा है अर्थात् हम सब अपनी बातें किसी को सुनाना और दूसरों की सुनना चाहते हैं। इसलिए यह कहा जा सकता है हर आदमी में कहानी लिखने का मूल भाव निहित है। यह बात दूसरी है कि कुछ लोगों में इस भाव का विकास हो जाता है और कुछ इसे विकसित नहीं करते।

जहाँ तक कहानी के इतिहास का सवाल है, वह उतना ही पुराना है जितना मानव इतिहास, क्योंकि कहानी मानव स्वभाव, प्रकृति का हिस्सा है। धीरे-धीरे कहानी कहने की आदिम कला का विकास होने लगा। कथा वाचक कहानियाँ सुनाते थे। किसी घटना— युद्ध, प्रेम, प्रतिशोध के किस्से सुनाए जाते थे। मानव स्वभाव का एक गुण कल्पना भी है। सच्ची घटनाओं पर आधारित कथा-कहानी सुनाते-सुनाते उसमें कल्पना का सम्मिश्रण भी होने लगा, क्योंकि प्रायः मनुष्य वह सुनना चाहता है जो उसे प्रिय है। मान लीजिए हमारा नायक कहीं युद्ध में हार ही क्यों न जाए लेकिन यदि वह नायक है तो हम यह सुनना चाहेंगे कि वह कितनी वीरता से लड़ा और कितनी बहादुरी से उसने एक अच्छे उद्देश्य के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए। नायक की वीरता का अच्छा बखान करने वाले कथावाचक की सब प्रशंसा करेंगे और उसे इनाम देंगे। कथावाचक सुनने वालों की आवश्यकतानुसार अपनी कल्पना के माध्यम से नायक के गुणों का बखान करेगा। मौखिक कहानी की परंपरा हमारे देश में बहुत पुरानी है और देश के कई भागों, विशेष रूप से राजस्थान में प्रचलित है।

प्राचीन काल में मौखिक कहानियों की लोकप्रियता इसलिए भी थी कि इससे बड़ा संचार का कोई और माध्यम नहीं था। इस कारण धर्म प्रचारकों ने भी अपने सिद्धांत और विचार लोगों तक पहुँचाने के लिए कहानी का सहारा लिया था। यही नहीं बल्कि शिक्षा देने के लिए भी कहानी की विधा का प्रयोग किया गया, जैसे पंचतंत्र की कहानियाँ लिखी गईं जो बहुत शिक्षाप्रद हैं। इस तरह आदिकाल में ही कहानी के साथ 'उद्देश्य' का सम्मिश्रण हो गया था जो आगे चल कर और विकसित हुआ।

कहानी का केंद्रीय बिंदु कथानक होता है। **कथानक है क्या?** कहानी का वह संक्षिप्त रूप जिसमें प्रारंभ से अंत तक कहानी की सभी घटनाओं और पात्रों का उल्लेख किया गया हो। उदाहरण के लिए प्रेमचंद की कहानी 'कफ़न' दस बारह पृष्ठों की कहानी है लेकिन इसका कथानक दस बारह पंक्तियों में लिखा जा सकता है। घीसू और माधव गाँव के दो गरीब और आलसी किसान हैं। बुधिया माधव की पत्नी है। वह प्रसव पीड़ा से कोठरी के अंदर तड़प रही है। कोठरी के बाहर घीसू और माधव अलाव में आलू भून कर खाने की तैयारी कर रहे हैं। बुधिया प्रसव पीड़ा से मर जाती है। दोनों के पास उसका कफ़न खरीदने के पैसे नहीं हैं। वे गाँव के ज़मींदार के पास पैसे माँगने जाते हैं। ज़मींदार पैसे दे देता है। गाँव के दूसरे संपन्न लोग भी पैसे देते हैं। घीसू और माधव कफ़न खरीदने बाज़ार जाते हैं पर कफ़न खरीदने के बजाय उन पैसों की शराब पीते हैं और नशे में मदहोश होकर गाना गाते मदिरालय में गिर पड़ते हैं।

यह कहा जा सकता है कि कथानक कहानी का एक प्रारंभिक नक्शा होता है। उसी तरह जैसे मकान बनाने से पहले एक बहुत प्रारंभिक नक्शा कागज़ पर बनाया जाता है। कहानी का कथानक



आमतौर पर कहानीकार के मन में किसी घटना, जानकारी, अनुभव या कल्पना के कारण आता है। कभी कहानीकार की जानकारी में पूरा कथानक आता है और कभी कथानक का एक सूत्र आता है, केवल एक छोटा-सा प्रसंग या कोई एक पात्र कथाकार को आकर्षित करता है। इसके बाद कथाकार उसे विस्तार देने में जुट जाता है। विस्तार देने का काम कल्पना के आधार पर किया जाता है पर यह समझना बहुत जरूरी है कि कहानीकार की कल्पना 'कोरी कल्पना' नहीं होती। ऐसी कल्पना नहीं होती जो असंभव हो। बल्कि ऐसी कल्पना होती है जो संभव हो। कल्पना के विस्तार के लिए लेखक के

पास जो सूत्र होता है उसी के माध्यम से कल्पना आगे बढ़ती है। यह सूत्र लेखक को एक परिवेश देता है, पात्र देता है, समस्या देता है। इनके आधार पर लेखक संभावनाओं पर विचार करता है और एक ऐसा काल्पनिक ढाँचा तैयार करता है जो संभावित हो और लेखक के उद्देश्यों से भी मेल खाता हो। उदाहरण के लिए लेखक ने अस्पताल के बाहर एक मरीज को देखा। जानकारी मिली कि यह मरीज पिछले एक सप्ताह से लगातार आ रहा है पर अभी तक उसे यह मौका नहीं मिल सका है कि डॉक्टर को दिखा सके। इस जानकारी के बाद लेखक की कल्पना अस्पताल, वहाँ की व्यवस्था, पात्रों आदि की गतिविधियों पर केंद्रित हो जाएगी। इसके साथ ही वह अपना उद्देश्य भी तय करेगा। क्या वह अस्पताल केंद्रित कहानी लिखना चाहता है? या वह केवल आप की पीड़ा तक अपने को सीमित रखेगा या क्या वह इस मानवीय त्रासदी को वर्तमान सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों से जोड़कर कथानक तैयार करेगा।

आमतौर पर कथानक में प्रारंभ, मध्य और अंत- अर्थात् कथानक का पूरा स्वरूप होता है। कथानक न केवल आगे बढ़ता है बल्कि उसमें द्वंद्व के तत्व भी होते हैं जो कहानी को रोचक बनाए रखते हैं। द्वंद्व के तत्वों से अभिप्राय यह है कि परिस्थितियों में इस काम के रास्ते में यह बाधा है। यह बाधा समाप्त हो गई तो आगे कौन-सी बाधा आ सकती है? या हो सकता है एक बाधा के समाप्त हो जाने या किसी निष्कर्ष पर पहुँच जाने के कारण कथानक पूरा हो जाए। कथानक की पूर्णता की शर्त यही होती है कि कहानी नाटकीय ढंग से अपने उद्देश्य को पूरा करने के बाद समाप्त हो। अंत तक कहानी में रोचकता बनी रहनी चाहिए। यह रोचकता द्वंद्व के कारण ही बनी रह पाएगी।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, हर घटना, पात्र, समस्या का अपना देश काल और स्थान होता है। कथानक का स्वरूप बन जाने के बाद कहानीकार कथानक के देशकाल तथा स्थान को पूरी तरह समझ लेता है, क्योंकि यह कहानी को प्रामाणिक और रोचक बनाने के लिए बहुत आवश्यक है। उदाहरण के लिए यदि अस्पताल का कथानक है तो अस्पताल का पूरा परिवेश, ध्वनियाँ, लोग, कार्य-व्यापार और लोगों के पारस्परिक संबंध, नित्य घटने वाली घटनाएँ आदि का जानना आवश्यक है। लेखक जब अपने कथानक के आधार पर कहानी को विस्तार देता है तो उसमें इन सब जानकारियों की बहुत आवश्यकता होती है।

देश काल, स्थान और परिवेश के बाद कथानक के पात्रों पर विचार करना चाहिए। हर पात्र का अपना स्वरूप, स्वभाव और उद्देश्य होता है। कहानी में वह विकसित भी होता है या अपना स्वरूप भी बदलता है। कहानीकार के सामने पात्रों का स्वरूप जितना स्पष्ट होगा उतनी ही आसानी उसे पात्रों का चरित्र-चित्रण करने और उसके संवाद लिखने में होगी। इस कारण पात्रों का अध्ययन कहानी की एक बहुत महत्वपूर्ण और बुनियादी शर्त है। इसके अंतर्गत पात्रों के अंतर्संबंध पर भी विचार किया जाना चाहिए। कौन-से पात्र की किस-किस परिस्थिति में क्या प्रतिक्रिया होगी, यह भी कहानीकार को पता होना चाहिए। दरअसल कहानीकार और उसके पात्रों के साथ निकटतम संबंध स्थापित होना चाहिए।

पात्रों का चरित्र-चित्रण करने अर्थात् उन्हें कहानी में कथानक की आवश्यकतानुसार अधिक से अधिक प्रभावशाली ढंग से लाने के कई तरीके हैं। चरित्र-चित्रण का सबसे सरल तरीका पात्रों के गुणों का कहानीकार द्वारा बखाना है। जैसे **मुर्लीधर बड़ा दानी है, वह दूसरों का ध्यान रखता है, चित्रों के लिए उसकी जान हाज़िर रहती है** आदि-आदि। पर यह तरीका प्रभावहीन और बहुत 'आउटडेटेड' है। पात्रों का चरित्र-चित्रण उनके क्रिया-कलापों, संवादों तथा दूसरे लोगों द्वारा बोले गए संवादों के माध्यम से ही प्रभावशाली होता है। उदाहरण के लिए, **मुर्लीधर ने एक गरीब आदमी को में सर्दी से ठिठुरते हुए देखा तो अपनी शाल उसे दे दी। या मुर्लीधर का दोस्त स्कूल में फ़ीस जमा कराने के लिए लाइन से बाहर निकल आया क्योंकि उसके पास पूरे पैसे नहीं थे। मुर्लीधर ने दोस्त को बताए बिना फ़ीस जमा करा दी।** मतलब यह कि पात्र जो काम करते हैं उनसे उनका सशक्त चित्रण होता है। दूसरे पात्र किसी का चरित्र-चित्रण अपने संवादों के माध्यम से कर सकते हैं जैसे राजीव अपने और मुर्लीधर के मित्र प्रयाग से कह रहा है—**यार इतनी बड़ी प्रॉब्लम तो मुर्लीधर ही 'सॉल्व' कर सकता है। चलो उसी के पास चलो।**

पात्रों का चरित्र-चित्रण, पात्रों की अभिरुचियों के माध्यम से भी होता है। समाज में अलग-अलग प्रकार के लोगों की अपने स्वभाव के अनुसार अलग-अलग अभिरुचियाँ होती हैं। मान लीजिए एक आदमी जंगल में जाकर खतरनाक जानवरों की तसवीरें खींचता है। निश्चित रूप से यह साहसी आदमी होगा। एक आदमी वेश्यावृत्ति करता है, झूठ बोलता है, दलाली करता है, कर्ज वापस नहीं करता। ऐसे आदमी का अपना अलग स्वरूप बनेगा।

कहानी में **पात्रों के संवाद** बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। संवाद के बिना पात्र की कल्पना मुश्किल है। संवाद ही कहानी को, पात्र को स्थापित, विकसित करते हैं और कहानी को गति देते हैं, आगे बढ़ाते हैं। जो घटना या प्रतिक्रिया कहानीकार होती हुई नहीं दिखा सकता, उसे संवादों के माध्यम से सामने लाता है। इसलिए संवादों का महत्व बराबर बना रहता है। पात्रों के संवाद लिखते समय यह अवश्य ध्यान में रहना चाहिए कि संवाद पात्रों के स्वाभाव और पूरी पृष्ठभूमि के अनुकूल होते हैं। वह

- ▶ कहानी का केंद्रीय बिंदु कथानक होता है।
- ▶ कहानी को प्रामाणिक और रोचक बनाने के लिए देशकाल, वातावरण तथा स्थान का ध्यान रखना आवश्यक है।
- ▶ लेखक पात्रों के बारे में खुद न बोलकर उनके क्रियाकलापों और संवादों के माध्यम से चरित्र को सशक्त बनाता है।
- ▶ द्वंद्व कथानक को आगे बढ़ाता है।
- ▶ कहानी लेखन सीखने का सबसे कारगर तरीका होगा कि अच्छी कहानियाँ पढ़ी जाएँ।

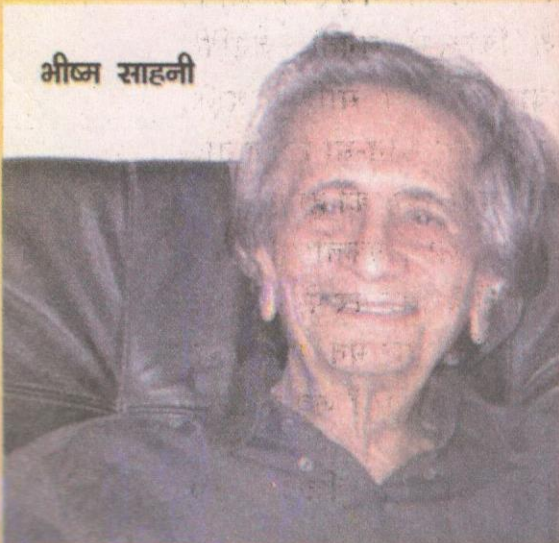
उसके विश्वासों, आदर्शों तथा स्थितियों के भी अनुकूल होने चाहिए। संवाद लिखते समय लेखक गायब हो जाता है और पात्र स्वयं संवाद बोलने लगते हैं। उदाहरण के लिए किसी मजदूर के संवाद ऐसे होने चाहिए कि केवल संवाद सुनकर ही श्रोता को पता चल जाए कि कौन बोल रहा है, यह आदमी क्या करता है, इसकी पृष्ठभूमि क्या है आदि-आदि। संवाद छोटे, स्वाभाविक और उद्देश्य के प्रति सीधे लक्षित होने चाहिए। संवादों का अनावश्यक विस्तार बहुत-सी जटिलताएँ पैदा कर देता है और कहानी में झोल आ जाता है।

कथानक के अनुसार कहानी चरम उत्कर्ष अर्थात् **क्लाइमेक्स** की ओर बढ़ती है। चरम उत्कर्ष का चित्रण बहुत ध्यानपूर्वक करना चाहिए क्योंकि भावों या पात्रों के अतिरिक्त अभिव्यक्ति चरम उत्कर्ष के प्रभाव को कम कर सकती है। कहानीकार की प्रतिबद्धता या उद्देश्य की पूर्ति के प्रति अतिरिक्त आग्रह कहानी को भाषण में बदल सकते हैं। सर्वोत्तम यह होता है कि चरम उत्कर्ष पाठक को स्वयं सोचने और लेखकीय पक्षधर की ओर आने के लिए प्रेरित करें लेकिन पाठक को यह भी लगे कि उसे स्वतंत्रता दी गई है और उसने जो निर्णय निकाले हैं, वे उसके अपने हैं।

पहले भी संकेत दिया गया है कि कथानक के बुनियादी तत्वों में द्वंद्व का महत्व बहुत अधिक है। द्वंद्व ही कथानक को आगे बढ़ाता है। उदाहरण के लिए अगर दो आदमी किसी बात पर सहमत हैं तो उनके बीच कोई द्वंद्व नहीं है और बातचीत आमतौर से आगे नहीं बढ़ सकती है। लेकिन असहमति है तो बातचीत सरलता से आगे बढ़ेगी। कहानी में द्वंद्व दो विरोधी तत्वों का टकराव या किसी की खोज में आने वाली बाधाओं, अंतर्द्वंद्व आदि के कारण पैदा होता है। कहानीकार अपने कथानक में द्वंद्व के बिंदुओं को जितना स्पष्ट रखेगा कहानी भी उतनी ही सफलता से आगे बढ़ेगी।

कहानी लिखने की कला सीखने का सबसे अच्छा और सीधा रास्ता यह है कि अच्छी कहानियाँ पढ़ी जाए और उनका विश्लेषण किया जाए। कहानी लेखन सिखाने की प्रक्रिया में सबसे अधिक कारगर माध्यम होगा कि अच्छी कहानियाँ पढ़ी जाएँ।

भीष्म साहनी



जब मैंने पहली कहानी लिखी

चाहिए तो यह था कि मेरी पहली कहानी प्रेम-कहानी होती। उम्र के एतबार से भी यही मुनासिब था और अदब के एतबार से भी। पर प्रेम के लिए (और प्रेम-कहानी के लिए भी) अनुकूल परिस्थितियाँ हों तब काम बने। ऐसी मेरी किस्मत कहाँ ! जिस इंटरमिडिएट कालिज में मैं पढ़ता था, वहाँ लड़कियाँ भी पढ़ती थीं। लेकिन वह अपनी किस्म का निराला ही कालिज था। लड़कियाँ हमारे साथ पढ़ती भी थीं और नहीं भी पढ़ती थीं। कालिज की इमारत एक ही थी, पर लड़कियाँ ऊपर की मंजिल पर पढ़ती थीं, और लड़के निचली मंजिल पर। उनकी अलग क्लासें लगतीं, हमारी अलग। हम लड़कों की आँखें उस जीने पर लगी रहतीं जहाँ से लड़कियाँ चढ़ती-उतरती थीं, या फिर उस सड़क पर जहाँ से वे आती-जाती थीं। हाँ, कालिज के बड़े हॉल में एक खिड़की, ऊपर की मंजिल से, अंदर की ओर खुलती थी, जिसके पीछे लड़कियों की कोई कक्षा बैठती थी। कभी-कभी उस खिड़की में से कोई परी-चेहरा झाँक लेता तो हम दर्शन कर लेते, पर लड़कों की इस 'बदतमीजी' को देखकर, कालिज के अधिकारियों ने खिड़की पर चिक टाँग दी थी। इससे, लड़कियाँ तो हमें भले ही देख सकें, पर हम लड़कियों को नहीं देख सकते थे। हम ज्यादा वक्त उनकी आवाजें ही सुन पाते, या उनकी टुनटुनाती हँसी, और हम इसी से संतुष्ट थे। पर कालिज के अधिकारियों को यह भी मंजूर नहीं था। वयोवृद्ध, वानप्रस्थी अधिकारियों को उनकी आवाजें चिल्लपों लगतीं, जबकि हमारे लिए वह संगीत था। चुनाँचे हर आधे घंटे बाद प्रिंसिपल साहिब, घड़ी उठाये, उन्हें ऊपर चुप कराने के लिए जाते। थोड़ी देर के लिए मौन-सा छा जाता, पर फिर वही कलरब शुरू हो जाता। कुल मिलाकर लड़कियों को हमसे कहीं ज्यादा आजादी थी। वे कालिज के अनगिनत झरोखों में से झाँक सकती थीं, आये दिन कभी केले का छिलका तो कभी आम की गुठली किसी के सिर पर फेंक सकती थीं, और इसके बाद खिलखिलाकर हँस सकती थीं, जबकि हम मन मसोसकर रह जाते। भला ऐसे माहौल में पढ़ता कौन ? और प्रेम कौन करता ? जब कालिज

से छुट्टी होती तो कुछ लड़कियाँ तो बुरका ओढ़ लेतीं, हमारे वहाँ इसका भी चलन था। कुछ अन्य ताँगों पर बैठकर घर के लिए रवाना हो जातीं, कुछ के नौकर उन्हें लेने चले आये होते, और कुछ के, कंटोली मूँछों वाले पिता या चाचा। फिर भी कुछ साहसी युवक ऐसे थे जो साइकल पर सवार ताँगे के पीछे-पीछे, लड़की के घर तक उसे छोड़ने चले जाते थे। पर यह प्रेम बड़ा जोखिम-भरा था और ज्यादा दिन तक चल नहीं पाता था। वह सूरमा या तो अपने ही पिता के हाथों पिट जाता था, या लड़की के भाई के हाथों, और यदि कोई और हाथ नहीं उठाता तो उसके सहपाठी लड़के ही, अपने ताने कस-कसकर उसके प्रेम का मलीदा बना डालते। बस, सारा प्रेम ताक-झाँक से ही शुरू होता और ताक-झाँक पर ही खत्म भी हो जाता। अब ताक-झाँक के बल पर प्रेम-कहानी तो नहीं लिखी जा सकती।

पर इन दुखद परिस्थितियों के बावजूद मेरे एक सहपाठी ने प्रेम कर ही दिखाया था। उसने प्रेम-पत्रों का माध्यम अपनाया और कामयाब हो गया। मैं नहीं जानता कि उसने पहला प्रेम-पत्र चलते ताँगे में फेंका, या कालिज के पते पर लड़की को भेजा, या कैसे भेजा। जरूरत ईजाद की माँ है, और जैसे-तैसे उसने अपने दिल के उद्गार ठिकाने पर पहुँचा पाने का इंतजाम कर लिया। लड़की खुश न होती तो क्या होती। फिर इधर से भी प्रेम-संदेश और उधर से भी प्रेम-संदेश। दो-एक बार तो मुझे भी हरकारे का काम सौंपा गया। मेरा दोस्त हवा में उड़ने लगा। पर फिर, वह सभी प्रेमियों की तरह एक जानलेवा भूल कर बैठा। संदेशों से ही संतुष्ट रहता तो बचा रहता, पर वह प्रेमी क्या जो संदेशों से ही सन्तुष्ट हो जाए? एक संदेश में उसने लड़की से मिलने का प्रस्ताव रखा और लिखा कि रेलवे स्टेशन पर मिलो, वहाँ से स्टेशन के पार घूमने जाएँगे। अब रेलवे स्टेशन गाड़ी पकड़ने के लिए तो ठीक जगह है, पर प्रेमिका से मिलने के लिए ठीक जगह नहीं है। रेलवे स्टेशन से निकलकर जब वे नीले आकाश के नीचे, हाथ में हाथ डाले, खेतों की सैर को निकले तब सबसे पहले तो उन्हें रेलवे स्टेशन के सहायक स्टेशन मास्टर साहिब ने ही देख लिया। उसकी अपनी लड़की कालिज में पढ़ती थी। स्टेशन की लाल-हरी झंडियाँ फेंक वह भागकर अपनी बेटी को बुला लाए। वात खुल गई। फिर क्या था, सारा शहर प्रेमियों पर पिल पड़ा। घर-घर में उनकी चर्चा होने लगी। बस, एक ही बार वे घूमने के लिए जा पाए। दूसरी बार निकले तो आधा शहर उनके पीछे-पीछे था। प्रेमियों का ऐसा जुलूस केवल हमारे शहर में ही निकल सकता था। अगर वे भागकर कैंटोनमेंट में नहीं छिप जाते तो उनका पथराव होना लाजमी था।

शहर में बाबेला उठ खड़ा हुआ। तरह-तरह की मीटिंगें हुई, कालिज के अधिकारियों के बीच, वानप्रस्थीजी और छात्रों के माँ-बाप के बीच, माँ-बाप और

शहर के डिप्टी-कमिश्नर के बीच। वक्त रहते यदि इस भ्रष्टाचार-दुराचार को नहीं रोका गया तो शहर रसातल में जा पहुँचेगा। शहर में प्रेम की महामारी फूट पड़ी थी। कुछ माँ-बाप ने तो अपनी लड़कियों को कालिज में से उठा लिया, कुछ ने अपने लड़कों का शाम के वक्त घर से बाहर निकलना बंद कर दिया। अंत में समस्या का एक ही समाधान निकल पाया। दोनों का ब्याह कर दो। और, महीने के अंदर ही अंदर दोनों का ब्याह कर दिया गया।

अब मैं यह प्रेम-कहानी तो कम से कम लिख ही सकता था। हीरो भी था, हीरोइन भी थी, दोनों खूबसूरत भी थे, जवान भी थे, प्रेम के रास्ते में रुकावटें भी थीं—जूतवाजारी, पथराव, कहकहे—और अंत में प्रेम-मिलाप भी था। सारा का सारा प्लाट तैयार था।

पर वास्तव में यह भी आसान नहीं था। कालिज में वानप्रस्थी जी और घर पर पिताजी, मेरी हर हरकत पर नजर रखते थे। पहले ही स्कूल के दिनों में मेरी बहुत-सी शिकायतें लग चुकी थीं। एक बार, फुफेरे भाई के उस्तरे से अपनी मूँछें मूँड चुका था और हेडमास्टर साहिब के बेंत खा चुका था। मूँछें मूँडना, उन दिनों, प्रेम करने से कम चरित्रहीन कर्म नहीं माना जाता था। मूँछें तो अभी नमूदार भी नहीं हुई थीं, केवल रोएँ ही थे, पर हेडमास्टर साहिब ने यह सोचकर कि मूँछें आने से पहले इसका यह हाल है तो सचमुच मूँछें आ जाने पर क्या होगा, अधोगति के किस गर्त में गिरेगा, मुझे अच्छी तरह से धुन दिया था। फिर एक बार 'पिया' शब्द पर भी चाँटे पड़ चुके थे। किसी दोहे में पिया शब्द का प्रयोग किया गया था और मैं उसे गुनगुनाते पकड़ा गया था। दो चाँटे तो छूटते ही पड़ गए थे, पर जब मैंने इसरार किया कि यहाँ 'पिया' शब्द का अर्थ परमेश्वर है तब पाँच चाँटे और पड़े, और साथ में हेडमास्टर साहिब ने यह टिप्पणी भी कर दी कि इस लड़के के भाई में और इसमें उतना ही फर्क है जितना नार्थ पोल और साउथ पोल में है।

इसलिए घर पर भी मेरी निगरानी रखी जाने लगी थी। मेरे बारे में पिताजी के विचार, हेडमास्टर साहिब के विचारों से बहुत कुछ मिलते-जुलते थे। इसी कारण, कालिज के दिनों में, वह मेरा एक अंग्रेजी नावल खिड़की के बाहर फेंक चुके थे। जब मैंने बार-बार कहा कि वह तो मेरे कोर्स की किताब थी, तब वह और भी ज्यादा बिगड़े, "अगर कालिज में तुम्हें ऐसी लच्चर किताबें पढ़ाते हैं तो तेरा कालिज जाना ही बंद कर दूँगा।"

उन दिनों मैं कसरत भी किया करता था। कद का छोटा होने के कारण यह भी ख्याल था कि शायद कसरत के द्वारा ही कद ऊँचा हो जाए। इसलिए व्यायाम संबंधी अंग्रेजी रसाले भी खरीदता रहता था। एक बार एक रसाले में दो तस्वीरें मुझे अच्छी लगीं जो मैंने फाड़कर रख लीं। ये दो आदर्श कसरतियों की

थी, एक व्यायाम करते पुरुष की, दूसरी व्यायाम करती महिला की। अब पुरुष वाली तस्वीर तो कहीं इधर-उधर हो गई, पर व्यायाम करती स्त्री की तस्वीर मेरी पाठ्य-पुस्तक में कहीं जा पहुँची। पिताजी गाढ़े-बगाड़े इन्स्पेक्शन पर आते थे। तस्वीर देखी तो बरस पड़े। किस्मत अच्छी थी, सफाई देते समय मुझे पुरुष कसरती की तस्वीर मिल गई। जान बूझी लाखों पाए। ऐसी स्थिति में प्रेम-कहानी कौन लिखता।

चुनचि मैंने वही लिखा जो मेरे जैसे माहौल में पलने वाले सभी भारतीय युवक लिखते हैं—अबला नारी की कहानी। हिंदी के अधिकांश लेखकों का तो साहित्य में पदार्पण अबला नारी की कहानी से ही होता है, और वह दुखांत होनी चाहिए। मैंने भी वैसा ही किया। बड़ी बेमतलब, बेतुकी कहानी थी, न सिर, न पैर, और शुरू से आखिर तक मनगढ़ंत, पर चूँकि अबला नारी के बारे में थी और दुखांत थी, इसलिए वानप्रस्थी जी को भी कोई एतराज नहीं हो सकता था, और पिताजी को भी नहीं, इसलिए कहानी, कालिज पत्रिका में स्थान पा गई।

पर इसके कुछ ही देर बाद एक प्रेम-कहानी सचमुच कलम पर आ ही गई। नख-शिख से प्रेम-कहानी ही थी, पर किसी दूसरी दुनिया की कहानी, जिससे मैं परिचित नहीं था। तब मैं कालिज छोड़ चुका था, और पिताजी के व्यापार में हाथ बँटाने लगा था। कालिज के दिन पीछे छूटते जा रहे थे, और आगे की दुनिया बड़ी ऊटपटाँग और बेतुकी-सी नजर आ रही थी। हर दूसरे दिन कोई न कोई अनूठा अनुभव होता। कभी अपने घुटने छिल जाते, कभी किसी दूसरे को तिरस्कृत होते देखता। मन उचट-उचट जाता। तभी एक दिन बाजार में...मुझे दो प्रेमी नजर आए।

शाम के वक्त, नमूनों का पुलिदा बगल में दबाए मैं सदर बाजार से शहर की ओर लौट रहा था, जब सरकारी अस्पताल के सामने, बड़े-से नीम के पेड़ के पास मुझे भीड़ खड़ी नजर आई। भीड़ देखकर मैं यों भी उतावला हो जाया करता था, कदम बढ़ाता पास जा पहुँचा। अंदर झाँककर देखा तो वहाँ दो प्रेमियों का तमाशा चल रहा था। टिप्पणियाँ और ठिठोली भी चल रही थी। घेरे के अंदर एक युवती खड़ी रो रही थी, और कुछ दूरी पर एक युवक जमीन पर बैठे, दोनों हाथों में अपना सिर धामे, बार-बार लड़की से कह रहा था, “राजो, दो दिन और माँग खा। मैं दो दिन में तंदुरुस्त हो जाऊँगा। फिर मैं मजूरी करने लायक हो जाऊँगा।”

और लड़की बराबर रोए जा रही थी। उसकी नीली-नीली आँखें रो-रोकर सूज रही थीं।

“मैं कहाँ से माँगूँ? मुझे अकेले में डर लगता है।”

दोनों प्रेमी, बास-पास खड़ी भीड़ को अपना साक्षी बना रहे थे।

“देखो बाबूजी, मैं बीमार हूँ। इधर अस्पताल में पड़ा हूँ। मैं कहता हूँ दो दिन और माँग खा, फिर मैं चंगा हो जाऊँगा।”

लड़की लोगों को अपना साक्षी बनाकर कहती, “यहाँ आकर बीमार पड़ गया, बाबूजी मैं क्या करूँ? इधर पुल पर मजबूरी करती रही हूँ, पर यहाँ मुझे डर लगता है।”

इस पर लड़का तड़पकर कहता, “देख राजो, मुझे छोड़कर नहीं जा। इसे समझाओ बाबूजी, यह मुझे छोड़कर चली जाएगी तो इसे मैं कहाँ ढूँढ़ूँगा।”

“यहाँ मुझे डर लगता है। मैं रात को अकेली सड़क पर कैसे रहूँ?”

पता चला कि दोनों प्रेमी गाँव से भागकर शहर में आए हैं, किसी फकीर ने उनका निकाह भी करा दिया है, फटेहाल गरीबी के स्तर पर घिसटने वाले प्रेमी! शहर पहुँचकर कुछ दिन तक तो लड़के को मजदूरी मिलती रही। पास ही में एक पुल था। वह पुल के एक छोर से सामान उठाता और दूसरे छोर तक ले जाता, जिस काम के लिए उसे इकननी मिलती। कभी किसी का साइकल तो कभी किसी का गट्ठर। हनीमून पूरे पाँच दिन तक चला। दोनों ने न केवल खाया-पिया, बल्कि लड़के ने अपनी कमाई में से जापानी छींट का एक जोड़ा भी लड़की को बनवा कर दिया, जो उन दिनों अढ़ाई आने गज में बिका करती थी।

दोनों रो रहे थे और तमाशबीन खड़े हँस रहे थे। कोई लड़की की नीली आँखों पर टिप्पणी करता, कोई उनके ‘ऐसे-वैसे’ प्रेम पर, और सड़क की भीड़ में खड़े लोग केवल आवाजें ही नहीं कसते, वे इरादे भी रखते हैं। और एक मौलवीजी लड़की की पीठ सहलाने लगे थे, और उसे आश्रय देने का आश्वासन देने लगे थे। और प्रेमी बिलख-बिलख कर प्रेमिका से अपने प्रेम के बास्ते डाल रहा था।

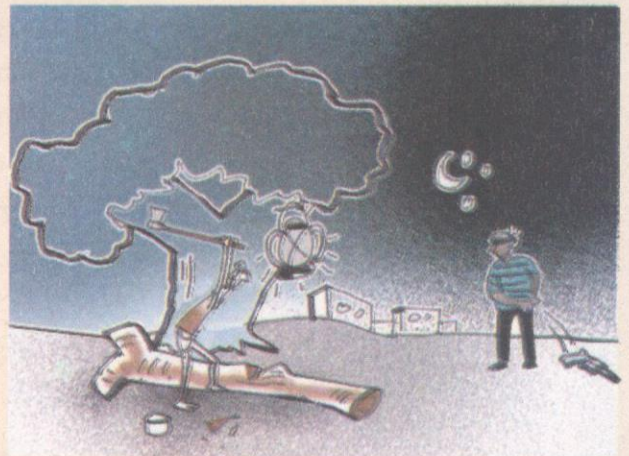
तभी, पटाक्षेप की भाँति अँधेरा उतरने लगा था और पीछे अस्पताल की घंटी बज उठी थी जिसमें प्रेमी युवक भरती हुआ था, और वह गिड़गिड़ाता, चिल्लाता, हाथ बाँधता, लड़की से दो दिन और माँग खाने का प्रेमालाप करता अस्पताल की ओर सरकने लगा और मौलवीजी सरकते हुए लड़की के पास आने लगे, और घबराई, किर्कल्टव्यविमूढ़ लड़की, मृग-शावक की भाँति सिर से पैर तक काँप रही थी...

नायक भी था, नायिका भी थी, खलनायक भी था, भाव भी था, विरह भी, और कहानी का अंत अनिश्चय के धुँधलके में खोया हुआ भी था।

मैं यह प्रेम-कहानी लिखने का लोभ संवरण नहीं कर सका। लुक-छिपकर लिख ही डाली, जो कुछ मुद्दत बाद ‘नीली आँखें’ शीर्षक से, अमृतरायजी के संपादकत्व में ‘हंस’ में छपी। इसका मैंने आठ रुपये मुआवजा भी वसूल किया जो आज के आठ सौ रुपये से भी अधिक था।

पाठ से संवाद

1. चरित्र-चरित्र के कई तरीके होते हैं। 'ईदगाह' कहानी में किन-किन तरीकों का इस्तेमाल किया गया है? इस कहानी में आपको सबसे प्रभावी चरित्र किसका लगा और कहानीकार ने उसके चरित्र-चित्रण में किन तरीकों का उपयोग किया है?
2. संवाद कहानी में कई महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाता है। महत्व के हिसाब से क्रमवार संवाद की भूमिका का उल्लेख कीजिए-
3. नीचे दिए गए चित्रों के आधार पर कहानी लिखिए-





4. एक कहानी में कई कहानियाँ छिपी होती हैं। किसी कहानी को किसी खास मोड़ पर रोककर नई स्थिति में कहानी को नया मोड़ दिया जा सकता है। नीचे दी गई परिस्थिति पर कहानी लिखिए—
सिद्धेश्वरी ने देखा कि उसका बड़ा बेटा रामचंद्र धीरे-धीरे घर की तरफ आ रहा है। रामचंद्र माँ को बताता है कि उसे अच्छी नौकरी मिल गई। आगे की कहानी आप लिखिए।